मगध का उदय एवं विस्तार

⇒ भारत में प्रारम्भिक राज्य संगठन का उद्भव सामान्यतः तीन चरणों में आगे बढ़ा। जनपद राज्य, महाजनपद राज्य से होते हुए विकास की यह प्रक्रिया ई.पू. छठी से चौथी सदी में साम्राज्यवादी चरण में पहुँच गई, जब मगध ने दूसरे महाजनपदों पर अधिकार कर साम्राज्यिक राज्य संगठन की अवधारणा को चरितार्थ किया। प्राचीन भारत में राज्य संगठन का यह प्रगाढ़तम् चरण था, जो मौर्यों के समय अपने आदर्श तक पहुँच गया और आनेवाले राजवंशों के लिए एक आदर्श बना रहा।

एक साम्राज्यिक राज्य के रूप में मगध का उदय मगध के भौगोलिक - आर्थिक महत्व, सामाजिक खुलेपन जिसमें विकास की अनुकूल दशा थी तथा मगध पर शासन करनेवाले राजवंशों की आकांक्षा एवं दूरदर्शिता का परिणाम था। उल्लेखनीय है कि छठी सदी ई.पू. तक भारत के विभिन्न जनपद राज्यों के समेकन की प्रवृत्ति का परिणाम यह हुआ कि भारत की राजनीतिक तस्वीर बहुत साफ हो गयी। तत्कालीन साहित्य में 16 महाजनपदों का उल्लेख मिलता है। इसके बाद धीरे-धीरे केन्द्रीकरण की राजनीतिक प्रवृत्ति साम्राज्यिक महत्वकांक्षा में बदल गई जिसमें कोशल वत्स, अवंती, मगध के बीच की प्रतिद्वंद्विता में अंतत: मगध को सफलता मिली।

मगध की सफलता का एक महत्वपूर्ण कारण उसकी भौगोलिक स्थिति थी। विस्तृत मैदानी क्षेत्र की उपलब्धता होने के कारण उसके पास कृषि का एक मजबूत आधार था। मगध की जनसंख्या तत्कालीन राज्यों की अपेक्षा अधिक थी। इसके आसपास के क्षेत्रों में खनिज संसाधनों की प्रचुरता का इसे लाभ प्राप्त था विशेषकर लोहा एवं ताम्बा के भंडार का मगध को अधिक लाभ मिला। बुद्ध युग तक लोहा न सिर्फ सैन्य दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हो चुका था बल्कि कृषि औजारों के रूप में भी इसका प्रयोग होने लगा था। मगध को अपने उत्तम शस्त्रास्त्र के लिए छोटानागपुर लौह अयस्क की खानों तक पहुँचना अधिक सुगम्य था। संभवत: यही कारण है कि मगध का पहला अभियान अपने पड़ोसी 'अंग' के विरुद्ध हुआ जिसकी भौगोलिक स्थिति लोहे के खानों के समीप थी तथा यह व्यापार के उन मार्गों पर कब्जा जमाए हुये था जिनसे होकर लोहा उत्तर भारत पहुँचता था।

Scanned with CamScanner

बुद्ध युग में उल्लेख मिलता है कि गंगा घाटी में कृषि का व्यापक प्रसार हुआ। पहले पहल धान के प्रतिरोपण का उल्लेख मिलता है, जिससे उत्पादकता में अवश्य वृद्धि हुई होगी। कृषि का विशाल मैदान एवं गंगा नदी की पानी की अत्यधिकता ने कृषि क्रांति को जन्म दिया। यह प्रगति "जनाकिकीय क्रांति" का कारण बनी जो इस बात से प्रमाणित होता है कि इस समय गंगा घाटी में बस्तियों के प्रसार के पुरातात्विक साक्ष्य बहुलता से मिलते हैं। साहित्यिक ग्रंथों में भी ग्राम से लेकर नगर तक के विभिन्न बस्तियों का उल्लेख मिलता है।

मगध अपनी भौगोलिक अवस्थिति के कारण नदीय व्यापार तंत्र पर प्रभावी नियंत्रण रखने में सक्षम हुआ जो उस काल में परिवहन का भी प्रमुख जरिया था। गंगा, सोन, पुनपुन गंडक आदि नदियों में निश्चित रूप से वाणिज्यिक गतिविधियों को गति प्रदान किया। इससे अर्थव्यवस्था का प्रसार हुआ। शिल्प एवं दस्तकारी के कार्यों में विशेषज्ञता हासिल की जाने लगी। तत्कालीन साहित्यिक ग्रंथों में 25 प्रकार के शिल्पों का उल्लेख इसका प्रमाण है।

आर्थिक समृद्धता एवं प्रचुर भौगोलिक संसाधनों ने मगध को सैन्य शक्ति के संगठन एवं विस्तार के लिए उपयुक्त अवसर प्रदान किया। मगध के वनों से मगध को "हाथी" मिले जिसे सेना में शामिल किया जाने लगा। इसका सामरिक महत्व ज्यादा था। ये दलदली इलाकों के लिए उपयुक्त होते थे साथ ही दुर्गों को भेदने में इसका इस्तेमाल किया जा सकता था। अन्य समकालीन महाजनपदों के पास गज सेना की कमी थी। इसप्रकार लौह युद्धास्त्रों, गज सेना तथा जल सेना की बहुलता ने मगध को अन्य महाजनपदों से अलग कर विशिष्ट स्वरूप प्रदान किया और उसे साम्राज्य के रूप में ढालने में सहायता की।

मगध का सामाजिक वातावरण अन्य राज्यों की अपेक्षा अधिक स्वतंत्र था जिसमें विकास की संभावना ज्यादा थी। मगध क्षेत्र 'पवित्र आर्यावर्त' क्षेत्र से बाहर था जिसके चलते इसपर आर्य रूढ़िवादी एवं अनुत्पादक सामाजिक-आर्थिक विचारों का प्रभाव कम था। ऋण, सूद पूंजी निवेश का चलन इस समाज में ज्यादा आसान था। यही वह क्षेत्र था जहाँ जैन एवं बौद्ध-धर्म के नये विचार प्रस्फुटित हुये थे,

Scanned with CamScanner

विशेषकर बौद्ध धर्म जो एक सामाजिक आंदोलन के रूप में उभरा। इन आंदोलनों का प्रभाव इस क्षेत्र के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन पर गहरे पड़ा। फलत: विकास के लिए एक अनुकूल स्थिति पैदा हुई। इस सामाजिक एकजुटता ने मगध को उत्कर्ष प्रदान किया।

मगध के विभिन्न राजवंशों एवं उनके शासकों ने भी मगध के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। प्रारम्भ में बिम्बिसार एवं अजातशत्रु जैसे महान सेनानायकों ने मगध साम्राज्य का नेतृत्व किया जो आगे शिशुनाग एवं महापद्मनंद जैसे शासकों ने।

मगध के साम्राज्यिक सत्ता के रूप में आरने में 'बिंबिसार' ने राजनीतिक सुदृढ़ीकरण तथा विस्तार की ठोस एवं व्यवहारिक नीति का सूत्रपात किया। उसने 'त्रिसूत्री नीति' अपनाई (a) राजवंशों से वैवाहिक संबंध कायम करना (b) कूटनीतिक संबंधों एवं मित्रता की नीति (c) युद्ध एवं विजय की नीति। यूरोप के हैप्सबर्गों एवं बूर्बों राजवंश की राजाओं की तरह बिम्बिसार ने भी तत्कालीन राजवंशों से वैवाहिक संबंध कायम किये। इन वैवाहिक संबंधों से वे राज्य मगध के मित्र बन गये साथ ही उसे नये क्षेत्र एवं धन की प्राप्ति हुई। उसने लिच्छवियों के साथ वैवाहिक संबंध कायम कर उत्तर दिशा से संभावित आक्रमण के खतरे को समाप्त कर दिया। इसका एक आर्थिक पहलू भी था। लिच्छवी की राजधानी 'वैशाली' गंगा नदी के किनारे स्थित एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र थी और नदीय व्यापार पर इसका प्रभावी नियंत्रण था। कोशल नरेश प्रसेनजित की बहन 'महाकोशला' से वैवाहिक संबंध कायम करना एक ऐसा कदम था जिससे मगध को अपने सबसे प्रबल प्रतिद्वंदी से राहत मिल गई। इस संबंध ने मगध को कुरुस की ओर से सुरक्षित किया और बिम्बिसार को 'काशी' जैसे एक लाख वार्षिक आय वाला क्षेत्र भी प्राप्त हुआ। इसने मद्र राजकुमारी खेमा के साथ विवाह कर उसने मगध के विस्तार में मद्रों का सहयोग प्राप्त किया।

राजनीतिक सुदृढ़ीकरण के लिए बिम्बिसार ने कूटनीति का सहारा लेते हुए अवंती, गांधार तथा सिंध के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित किये। बिम्बिसार ने अवंति शासक चंडप्रद्योत की चिकित्सा हेतु अपना राजवैद्य जीवक को भेजा।

बिम्बिसार ने राजनीतिक सुदृढ़ीकरण और विस्तारवादी

Scanned with CamScanner

नीति का आक्रामक रूप अंग के खिलाफ दिखाया तथा अंगराज ब्रह्मदत्त को मार डाला। लौह अयस्क जैसे महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधनों के युक्त अंग अब मगध साम्राज्य का हिस्सा बन चुका था।

इसके अतिरिक्त बिम्बिसार ने मगध में अवस्थित शासन की नींव डाली। विभिन्न पदाधिकारियों की नियुक्ति की, नियमित करवसूली की व्यवस्था की जो उसकी आर्थिक, सैन्य शक्ति का आधार बना। न्याय व्यवस्था को सुदृढ़ किया तथा बौद्ध एवं जैन धर्म के प्रति धार्मिक उदारता दिखलाई।

राजनीतिक, सैन्य एवं प्रशासनिक सुदृढ़ीकरण की बिम्बिसार की नीतियों ने मगध को अन्य समकालीन शक्तियों की तुलना में लाभ की स्थिति में ला दिया। यही कारण है कि बिम्बिसार के उत्तराधिकारी 'अजातशत्रु' के समय राजनीतिक विस्तार की नीति में आक्रामकता अधिक दिखता है। इसने काशी के प्रश्न को लेकर कोशल से युद्ध किया। काशी मगध साम्राज्य का अंग हो गया। अजातशत्रु की महान विजय 'लिच्छवी गणराज्य' की थी। पूर्वी भारत में मगध की सत्ता उस समय तक श्रेष्ठ नहीं बन सकती थी जब तक लिच्छवियों के इस संघ को नष्ट नहीं किया जाता। इसने कूटनीति से वस्सकार की सहायता से महत्वपूर्ण लक्ष्य को प्राप्त किया।

काशी, अंग और लिच्छवी राज्य के हिस्सों से मगध साम्राज्य का व्यापक विस्तार हो गया था। मगध की विस्तारवादी नीति शिशुनाग के समय अधिक आक्रामक हो गयी थी। उसने अवंती, वत्स, कोशल के राज्यों पर विजय पाई और इन्हें मगध साम्राज्य का हिस्सा बना लिया गया।

इन्हीं विस्तारों का परिणाम था कि आगे नंद वंश के 'महापद्मनंद' ने 'एकराट' और 'एकछत्र' जैसी उपाधियाँ धारण की तथा प्रथम वृहत मगध साम्राज्य की स्थापना की। नंद राजाओं ने पाटलिपुत्र को केन्द्र बनाकर लगभग समस्त उत्तर भारत पर शासन किया, विशाल सेना का गठन किया और एक सुव्यवस्थित प्रशासनिक संगठन कायम किया। यह भारत का प्रथम साम्राज्यिक प्रयोग था जिसे आगे चलकर चन्द्रगुप्त मौर्य के नेतृत्व में भारत में साम्राज्यवादी शासन और राज्य प्रणाली के रूप में उभरने का मौका मिला।

—X—